13 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

डबल रूप से सेवा द्वारा
आध्यात्मिक जागृति लाने का अनुभव

➢➢ मैं ब्रह्मा मुख वंशावली ब्रह्माकुमारी हूँ...

➳ _ ➳ अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख स्व-चिन्तन कर रही..

→ जिसको पाने ना जाने कितने व्रत, उपवास, दान किए..

→ यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, ध्यान-साधनाएं की..

→ जिसको मंदिरों, तीर्थों में ढूंढ रही थी..

■ घर बैठे वो भगवान मुझे मिल गया..

→ मैं उसे ढूंढ रही थी पर उसने मुझे ढूँढा..

→ ब्रह्मा तन द्वारा मुझे गोद लेकर अपना बनाया..

➳ _ ➳ सदा ब्रह्माकुमारी होने के निश्चय वा नशे में रहती हूँ..

→ परमात्मा मेरा पिता बनकर

■ रोज मेरी श्रेष्ठ पालना करते हैं

→ शिक्षक बनकर रोज मुझे पढ़ाकर

■ गुह्य ज्ञान देते हैं

→ सतगुरु बन श्रेष्ठ श्रीमत देकर

■ मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग बताते हैं

→ मैं आत्मा उसकी याद में बैठकर

■ विकारों से मुक्त हो रही हूँ..

■ देवताई गुणों को धारण कर रही हूँ..

■ रावण के रंगीन मायावी दुनिया से निकल

■ पावन दुनिया में पहुँच रही हूँ..

→ श्वेत वस्त्र पहन, बैज लगाकर मैं ब्रह्माकुमारी

■ अपने चमकते भाग्य के रंगीन सितारों को

■ देख हर्षित हो रही हूँ..

➢➢ मैं सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अंतर्मुखी होकर बाबा की याद में बैठी हुई मैं आत्मा

→ बाबा के किरणों की धारा मुझ पर बह रही है..

→ मेरा स्थूल शरीर धीरे-धीरे गायब हो रहा है..

→ चमकीला सूक्ष्म शरीर धारण कर रही हूँ..

■ सम्पूर्ण शरीर प्रकाशमय हो गया है..

■ बहुत ही हल्कापन महसूस हो रहा है..

→ मेरे सूक्ष्म शरीर से चारों ओर प्रकाश फ़ैल रहा है..

→ ये स्थूल देह और स्थूल दुनिया को छोड़

■ पहुँच जाती हूँ सूक्ष्म वतन..

➳ _ ➳ वतन में अव्यक्त बापदादा मेरे इन्तजार में बैठे हुए..

→ मेरे मीठे बच्चे कह

■ अपने गले लगा रहे हैं

→ वरदानी हाथों से

■ वरदानों की पुष्प वर्षा कर रहे हैं

→ अव्यक्त होकर भी

■ साकार पालना का अनुभव करा रहे हैं

→ गुणों, शक्तियों और खजानों से

■ भरपूर कर रहे हैं

→ सर्व सम्बन्धों का अनुभव करा रहे हैं..

→ मेरा बाबा कहते ही हाजिर हो जाते हैं..

■ और अपनी मदद का अनुभव कराते हैं..

➳ _ ➳ अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्टेज को क्लियर देख रही हूँ

→ बापदादा मेरा हाथ पकड ले जाते हैं

■ वतन की चित्र प्रदर्शनी में..

→ जहाँ बहुत ही दिव्य फरिश्तों की तस्वीर सजी हुई हैं..

→ मेरा भी सम्पूर्ण फ़रिश्ते रूप का चित्र लगा हुआ है..

→ जिसकी स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, कृति में

■ सम्पूर्ण पावनता की झलक दिखाई दे रही है..

■ बेहद की वैराग्य वृत्ति दिखाई दे रही है..

■ विश्व कल्याण की भावना झलक रही है..

■ सर्वगुण सम्पन्न, 16 कलाओं से सम्पूर्ण

■ भविष्य देवताई स्वरुप की झलक समीप दिखाई दे रही है..

→ धीरे-धीरे मैं अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरुप में समा जाता हूँ..

➢➢ डबल रूप से सेवा द्वारा विश्व में आध्यात्मिक जागृति ला रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा ब्रह्माकुमारी बन सेवा कर रही हूँ..

→ सबको बाबा का ज्ञान सुनाकर

■ वाचा सेवा कर रही हूँ..

→ बाबा का परिचय देकर

■ बाबा का सन्देश दे रही हूँ..

→ जगह-जगह अध्यात्मिक प्रदर्शनी में

■ संगठित रूप से सेवा कर रही हूँ..

■ संगठन का झण्डा लहरा रही हूँ..

→ आवाज बुलन्द करने की जागृति का कार्य कर रही हूँ..

→ सबको अपने सच्चे पिता से मिलवा रही हूँ..

➳ _ ➳ फ़रिश्ते स्वरुप की स्टेज में स्थित होकर मनसा सेवा कर रही हूँ...

→ मैं फ़रिश्ता व्यक्त में होते हुए भी

■ अव्यक्त फ़रिश्ता बन सेवा कर रहा हूँ..

→ अन्तःवाहक शरीर धारण कर बाबा के साथ

■ विश्व का चक्र लगा रहा हूँ..

→ फालो फादर कर

■ अपने फ़रिश्ता रूप का अनुभव करा रहा हूँ..

→ अपने लाइट से

■ चारों ओर के अन्धकार को भगा रहा हूँ..

→ संगठन में साकारी के साथ-साथ

■ आकारी सेवा कर रहा हूँ..

➳ _ ➳ सफेद वस्त्रधारी और सफेद लाइटधारी बन

➳ _ ➳ डबल रूप की सेवा कर रहा हूँ..

→ चारों ओर अनोखी हलचल मच रही है..

→ सबको चारोँ ओर फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते नजर आ रहे हैं..

→ आसमान में लाइट ही लाइट दिख रहा है..

→ हम फरिश्तों की तरफ सबका अटेंशन जा रहा है..

→ दूर-दूर तक चारों ओर आवाज फ़ैल रहा है

■ यह वही ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं

■ जो फरिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं..

→ चारों ओर धूम मच रही है

■ ये सफ़ेद वस्त्रधारी ही सफ़ेद लाइटधारी हैं..

→ निराकार बाप प्रत्यक्ष हो रहा है..